Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 23

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

8 जून 2017 ई 12 रमज़ान 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सच्ची ख़ुशहाली का स्त्रोत ख़ुदा है

यदि ख़ुदा से सहायता नहीं मांगोगे, उससे शक्ति मांगना अपनी दिनचर्या नहीं बनाओगे तो तुम्हें कोई सफलता प्राप्त नहीं होगी

ख़ुदा तुम्हारे समस्त प्रयासों का आधारभूत स्तम्भ है । यदि स्तम्भ गिर जाए तो क्या कड़ियां अपनी छत पर टिकी रह सकती हैं ? कदापि नहीं, बल्कि एक बार में ही गिर पड़ेंगी।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"तुम सच्चे उसी समय बनोगे जब तुम प्रत्येक संकट के समय किसी भी प्रयास से पूर्व सबसे विरक्त होकर ख़ुदा की चौखट पर गिरो कि हे ख़ुदा ! मेरे समक्ष यह समस्या है, अपनी विशेष अनुकम्पा से इस समस्या का समाधान कर। तब ख़ुदा के फ़रिश्ते तुम्हारी सहायता करेंगे और अदृश्य शक्ति की ओर से कोई मार्ग तुम्हारे लिए प्रशस्त किया जाएगा। अपने प्राणों पर दया करो। जो लोग ख़ुदा से अपने समस्त संबंध समाप्त कर चुके हैं और तन-मन से पूर्णरूपेण संसार पर निर्भर हैं, यहां तक कि शक्ति और सामर्थ्य मांगने के लिए अपने मुख से इन्शाअल्लाह भी नहीं कहते, उनका अनुसरण मत करो। ख़ुदा तुम्हारे नेत्र खोले ताकि तुम्हें ज्ञात हो कि तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे समस्त प्रयासों का आधारभूत स्तम्भ है। यदि स्तम्भ गिर जाए तो क्या कड़ियां अपनी छत पर टिकी रह सकती हैं ? कदापि नहीं बल्कि एक बार में ही गिर पड़ेंगी और संभव है कि उनसे कई मौतें भी हो जाएं। इसी प्रकार तुम्हारे प्रयास भी ख़ुदा की सहायता के बिना सफल नहीं हो सकते। यदि तुम उससे सहायता नहीं मांगोगे, उससे शक्ति मांगना अपनी दिनचर्या नहीं बनाओगे तो तुम्हें कोई सफलता प्राप्त नहीं होगी। अंतत: बड़ी हसरत के साथ मरोगे। यह मत सोचो कि फिर अन्य क़ौमें क्योंकर सफलता प्राप्त कर रही हैं, जबकि वह उस ख़ुदा को जानती भी नहीं जो सर्वशक्ति सम्पन्न है। इसका उत्तर यही है कि वे ख़ुदा को छोड़ने के कारण संसार की परीक्षा में डाली गई हैं। ख़ुदा की ओर से परीक्षा के प्रारूप अनेक हैं । कभी परीक्षा का प्रारूप यह होता है कि जो मनुष्य ख़ुदा को छोड़कर संसार की मौज-मस्तियों से दिल लगाता है, संसार के धन-दौलत की आकांक्षा करता है, प्राय: ऐसे मनुष्य के लिए संसार के द्वार खोल दिए जाते हैं, पर धर्म के लिहाज़ से वह बड़ा दरिद्र और हीन होता है। संसार की प्राप्ति हेतु विचार मग्न रहकर ही मरता और नर्क में चला जाता है। कभी परीक्षा का प्रारूप ऐसा होता है कि संसार में भी असफल रहता है। पर यह परीक्षा इतनी भयानक नहीं जितनी प्रथम, जिसका वर्णन किया जा चुका है। क्योंकि प्रथम परीक्षा वाला अधिक अभिमानी होता है। अत: यह दोनों समूह ही वे हैं जिन पर ख़ुदा का प्रकोप रहता है। सच्ची ख़ुशहाली का स्त्रोत ख़ुदा है। जब ये लोग उस शाश्वत, और जीवन प्रदान करने वाले ख़ुदा से अज्ञान हैं बल्कि लापरवाह हैं, उस से विमुख हो रहे हैं, तो सच्ची ख़ुशहाली उन्हें किस प्रकार प्राप्त हो सकती है। बधाई हो उस मनुष्य को जो इस रहस्य को पा ले । विनाश हो गया उस मनुष्य का जो इस रहस्य को न पा सका। इसी प्रकार तुम्हें चाहिए कि संसार के दार्शनिकों का अनुसरण न करो, उन्हें सम्मान की दृष्टि से मत देखो क्योंकि यह सब मूर्खताएं हैं। सच्चा दर्शन वही है जिसकी शिक्षा ख़ुदा ने अपनी वाणी में दी है। विनाश हो गया उन लोगों का जो इस संसार के दर्शन पर मोहित हैं। सफल हैं वे लोग जिन्होंने सत्य ज्ञान और दर्शन को ख़ुदा की पुस्तक में खोजा। मूर्खता के मार्ग क्यों चुनते हो । क्या तुम ख़ुदा को उन बातों की शिक्षा दोगे जिन्हें वह नहीं जानता। क्या तुम अंधों के पीछे दोड़ते हो कि वे तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करें। हे मूर्खो ! जो स्वयं अंधा है वह तुम्हारा पथ प्रदर्शन क्या करेगा। सच्चा दर्शन ख़ुदा द्वारा प्राप्त होता है, जिसका तुम से वायदा किया गया है। तुम ख़ुदा की सहायता से उस पवित्र ज्ञान तक पहुंच सकोगे, जिन तक अन्य लोग नहीं पहुंच सकते। यदि पूर्ण श्रृद्धा से याचना करोगे तो तुम्हें वह प्राप्त होंगे, तब तुम्हें ज्ञात होगा कि यथार्थ ज्ञान यही है जो हृदय को ताज़गी और जीवन प्रदान करता है और विश्वास के मीनार तक पहुंचा देता है। वह जो स्वयं मुरदे खाता है वह तुम्हारे लिए पवित्र भोजन कहां से उपलब्ध कराएगा, जो स्वयं अंधा है वह तुम्हें कैसे दिखाएगा। प्रत्येक पवित्र दर्शन आकाश से आता है। अत: तुम धरती के लोगों से क्या आशा रखते हो। जिनकी रूहें आकाश की ओर प्रस्थान करती है वे ही सत्य दर्शन के पात्र और अधिकारी हैं। जो स्वयं सन्तुष्ट नहीं, वे तुम्हें क्यों कर सांत्वना दे सकते हैं। पर प्रथम हृदय की पवित्रता अनिवार्य है, सत्य और स्वच्छता आवश्यक है। इस के बाद तुम्हें ये सब कुछ प्राप्त होगा ।

(कश्ती नूह, रूहानी खज़ायन,भाग 19, पृष्ठ 23 -24)

☆ ☆ ☆

123 वां
जलसा सालाना क़ादियान
दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

☆ वास्तविक न्याय तब तक स्थापित नहीं हो सकता जब तक प्रत्येक अपने सारे निजी हितों को छोड़ने पर राज़ी न हो जाऐं। ☆ एक व्यक्ति जो बिना किसी पूर्वाग्रह के इस्लामी शिक्षाओं पर विचार करे तो देखेगा कि ये शिक्षाएं तो पूर्ण रूप से हर प्रकार के अन्याय, भेदभाव और बुराई के ख़िलाफ हैं।

☆एक मुसलमान पर फरज़ है कि वह अपने बड़े से बड़े दुश्मन के साथ न्याय के साथ कार्रवाई करे और उसकी दुश्मनी या ईर्ष्या उसे बदला लेने के लिए मजबूर न करे।

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लात तआला बेनसरहलि अज़ीज़ का 11 नवम्बर 2016 ई को पीस सिमपोज़ियम कैलगरी कनाडा में ऐतिहासिक ईमान वर्धक ख़िताब संबोधन (अन्तिम भाग-2)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: फिर अल्लाह कुरआन में सूर: अंफाल आयत 62 में फरमाता है चाहे कैसे भी हालात हों मुसलमानों को शांति और सुलह का मौका हाथ से जाने नहीं देना चाहिए। इस आयत में अल्लाह फरमाता है "और (यदि तुम्हरी तैयारियों को देखकर) वह (काफिर) सुलह की तरफ झुकते तो (हे रसूल!) तो भी सुलह की ओर झुक जो और अल्लाह तआला पर भरोसा कर। अल्लाह तआला वास्तव में बहुत दुआ सुनने वाला (और) बहुत जानने वाला है। "

इसका मतलब है कि मुसलमान को शांति की तरफ जाने वाले हर संभव रास्ता को धारण करना चाहिए। उदाहरण के तौर पर संभव है कि युद्ध के दौरान एक शानदार हमला करने के लिए और फिर से अपने सैनिकों को इकट्ठा करने के लिए संघर्ष विराम की अपील केवल एक युद्ध की चाल हो। अत: अल्लाह तआला सूर: अन्फाल की आयत 63 में फरमाता है"और अगर वह इस बात का इरादा रखते हों कि बाद मैं तुझे धोखा दें तो (याद रख कि) अल्लाह तेरे लिए बेशक पर्याप्त है वही है जिसने तुझे मोमिनों के द्वारा और अपनी मदद के माध्यम से मज़बूत किया। "

इसलिए अगर यह भी डर पैदा हो कि विरोधी शायद धोखा देने के लिए ऐसा कर रहा तो तब भी मुसलमानों को आदेश दिया गया है कि वह अपने इन खोफों को एक तरफ करते हुए अल्लाह तआला पर भरोसा करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो कुछ मैंने बयान किया उसके आलोक में क्या अभी भी कहा जा सकता है कि इस्लाम उग्रवाद और आतंकवाद का धर्म है? ज़ाहिर है कि इस सवाल का जवाब निषेध है। बल्कि स्पष्ट रूप से यह साबित होता है कि अगर आजकल मुसलमान अत्याचार ढा रहे हैं और अकथ्य हरकतें कर रहे हैं तो ये लोग इस्लाम की मूल शिक्षाओं का अपमान कर रहे हैं। इसलिए मुसलमानों को दूसरे देशों में दाख़िल होकर हत्याओं और ज़ुल्म ढाने की अनुमति कैसे हो सकती है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: फिर आगे बढ़ते हैं। मुमकिन है कि कुछ लोग यह मान जाएं कि इस्लामी शिक्षाएं शांतिपूर्ण हैं लेकिन इसके बावजूद उनका सवाल होगा कि क्या रसूले करीम (स.अ.व.) के दौर में वाकई इन शिक्षाओं पर अनुकरण भी हुआ था? इस संबंध में आप मेरे शब्दों पर न जाएं बल्कि ग़ैर मुस्लिम इतिहासकार और पूर्वी ज्ञान के विद्वानों, जिन्होंने बड़ी सावधानी के साथ रसूले करीम (स.अ.व.) के ज़माने का अध्ययन किया है, देखें कि वह रसूले करीम (स.अ.व.) और आप (स.अ.व.) के साथियों के विषय में क्या कहते हैं। जैसे एक ब्रिटिश प्राच्य और पुरातत्वविद् Stanely Lane-Poole जो डबलिन विश्वविद्यालय में अरबी के प्रोफेसर हैं वह रसूले करीम (स.अ.व.) के लगातार उत्पीड़न सहने के बाद फिर से अपने मातृभूमि मक्का में विजयी वापसी पर आप (स.अ.व.) के आचरण के विषय में लिखते हैं :

" मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की अपने दुश्मनों के ख़िलाफ सबसे बड़ी सफलता का दिन भी वही दिन था जिस दिन मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने अपने नफ्स पर भव्य जीत हासिल की थी। मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने क़ुरैश के उन सभी ज़ुलमों और दुखों को खुलेआम माफ कर दिया जो वह आप (स.अ.व.) पर सालों तक ढाते रहे थे और आप ने सारे मक्का वालों के लिए आम माफी की घोषणा फरमा दी.आप (स.अ.व.) की सेना ने आप के नमूना पर अनुकरण किया और बहुत शांति के साथ मक्का में दाखिल हुई। न कोई घर लूटा गया, न किसी महिला को पीटा गया ..... यह था वह दृश्य जब मुहम्मद ने (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अपने गृहनगर में फिर प्रवेश किया। दुनिया के सभी युद्धों की तारीख में इस भव्य जीत की कोई तुलना नहीं है। "

(The Speeches and Table Talk of the Prophet Muhammad by S Lane Poole)

अत: यह लेखक इस तथ्य पर गवाह है कि जीत के समय रसूले करीम (स.अ.व.) ने न तो किसी वैभव का प्रदर्शन किया और न ही उन लोगों से बदला लिया जिन्होंने आप (स.अ.व.) और आप (स.अ.व.) के साथियों को बहुत कष्ट दिए थे। बल्कि आप (स.अ.व.) की प्रतिक्रिया प्रत्येक के लिए माफी थी। इसलिए मैं एक बार फिर आप पूर्ण रूप से आप पर स्पष्ट कर दूं कि वे लोग जो आतंकवाद और चरमपंथ का प्रदर्शन करते हैं वह कुरआन की शिक्षाओं और रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के आदर्श का उल्लंघन करते हैं। एक तरफ तो पैग़म्बरे इस्लाम हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने उन सभी लोगों को माफ फरमा दिया जो आप (स.अ.व.) और आपके प्रियजनों को यातनाएं दीं और दूसरी तरफ आजकल तथाकथित मुस्लिम अत्यधिक अत्याचार कर रहे हैं और निर्दोष लोगों को बेरहमी के साथ कत्ल कर हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: लेकिन यहाँ यह वर्णन करना भी आवश्यक है कि आजकल मुस्लिम देशों में जो युद्ध लड़े जा रहे हैं उन्हें बाहर से खुलेआम या चुपके से भड़काया जा रहा है। मुसलमान सरकारों और न ही विद्रोहियों और दहशतगर्द संगठनों से किसी के पास इस तरह के आधुनिक और घातक हथियार बनाने की क्षमता है जो वे उपयोग कर रहे हैं। अत: सीरिया और इराक में उपयोग होने वाला अक्सर हथियार बाहर से आयात हो रहा है। इसलिए ऐसे देश जो ये हथियार बना रहे हैं और मुसलमानों के साथ शस्त्र व्यापार कर रहे हैं उन्हें भी आजकल की बुराईयों के हवाले से अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी निभानी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कई विश्लेषक और विशेषज्ञ निस्संदेह इस बात को साबित कर चुके हैं कि आतंकवादी समूह आई एस और कुछ अन्य विद्रोही और उग्रवादी समूहों द्वारा उपयोग में लाए गए हथियार वास्तव में पश्चिम और पूर्वी यूरोप के देशों में बनाए गए हैं। इसलिए बड़ी शक्तियां मुस्लिम देशों में भयावह युद्धों को समाप्त करने के स्थान पर उन्हें अधिक भड़का रही हैं। बजाय इसके कि वे शांति को प्राथमिकता दें वे लगातार इस स्थिति पर प्रभाव डाल रहे हैं और युद्ध जंग को अपने लाभ के लिए कर रहे हैं। मुस्लिम देशों में जहाँ गृहयुद्ध या दंगे हुए हैं वहाँ अच्छा समाधान यही था कि केवल पड़ोसी देश इसमें हस्तक्षेप करते और इस क्षेत्र में शांति की स्थापना की जिम्मेदारी उठाते। लेकिन बड़ी शक्तियों की विदेश नीति और उनके व्यावसायिक हित कुछ चाहते हैं। उदाहरण के रूप में कुछ पश्चिमी देश सऊदी अरब को करोड़ों डॉलर के बदले में भारी हथियार बेचते चले जा रहे हैं बावजूद यह कि यह हथियार अरब के एक छोटे देश यमन में घिनौने ज़ुल्म ढाने के लिए उपयोग हो रहा है। हथियार का धंधदा उपयोग और बमबारी लाखों लोगों के जीवन को नष्ट कर रही है और शहरों और कस्बों का सफ़ाया हो रहा है जिसके परिणाम में हजारों मासूम लोग मर रहे हैं। यहां तक कि अस्पताल जैसी जगहें जहां लोग शरण लेते हैं उन्हें भी निशाना बनाया जा रहा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यही कुछ सीरिया और इराक में भी हो रहा है जहां डॉक्टरों और नर्सों को भी निशाना बनाया जा रहा है जिन्होंने बड़ी बहादुरी के साथ पीड़ितों की मदद करने का बीड़ा उठाया था। इसी तरह धार्मिक इबादतगाहों को निशाना बनाना भी सामान्य हो चुका है। फिर कई मंज़िलों वाले आवासीय भवनों को निशाना बनाया जा रहा है जहां मासूम बच्चे और महिलाएं मर रहे हैं। इन सारे अत्याचार को कैसे मान्यता दे सकते हैं? इस आधुनिक युग में आप इसे कैसे सहन कर सकते हैं? और अन्त में इन अनुचित नीतियों का क्या परिणाम होगा?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यही कारण है कि इन देशों की युवा पीढ़ी को चरमपंथ आकर्षित किया जा रहा है। अपने भविष्य की सभी उम्मीदें खो देने के बाद यह युवा पश्चिम के अंदर आतंकवाद के घिनौने ज़ुल्म ढहा कर अपनी प्रतिक्रिया कर रहे हैं और समझते हैं कि पश्चिमी देशों का उनके विनाश के पीछे बड़ा हाथ है। इसलिए मैं एक बार फिर कहूंगा कि दुनिया को

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हम जो अहमदी कहलाते हैं वास्तविक अहमदी तभी बन सकते हैं जब हम अस्थायी और सांसारिक इच्छाओं और सुख को अपना लक्ष्य न बनाएं।

अल्लाह तआला ने जो नेअमतें पैदा की हैं निःसन्देह मोमिनों के लिए जायज़ हैं शर्त यह है कि जायज़ माध्यमों से प्राप्त की जाए और वे धर्म के रास्ते में अल्लाह तआला की सृष्टि के हक अदा करने के रास्ते में रोक न बन जाएं। इबादतों में रोक न बन जाऐं। दुनिया के प्राप्त करने में वास्तविक उद्देश्य धर्म हो और ऐसे रूप से दुनिया को प्राप्त किया जाए कि वह धर्म की सेवक हो।

कुरआन मजीद तथा हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों की रोशनी में सांसारिक खेल कूद तथा गर्व और माल एवं औलाद पर अंहकार में पीड़ित होने से बचने के लिए और दुनिया की भलाई को प्राप्त करने के बारे में प्रमुख उपदेश।

आदरणीय बशारत अहमद साहिब पुत्र आदरणीय मुहम्मद अब्दुल्ला साहिब खानपुर ज़िला रहीम यार खान और आदरणीया प्रोफेसर ताहिरा परवीन मलिक साहिबा आफ लाहौर की शहादतों के वर्णन। दोनों शहीदों के ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 5 मई 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّ مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ؕ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ

(सूरह अल्हदीद आयत 21)

इसका अनुवाद है कि हे! लोगो जान लो कि दुनिया का जीवन केवल एक खेल है और दिल बहलावा है और सुन्दरता पाने और आपस में गर्व करने और एक दूसरे पर माल और औलाद में बड़ाई जताने का माध्यम है। इसकी हालत बादल से पैदा होने वाली खेती जैसी है जिस का अंकुरित होना ज़मीनदार को बहुत पसंद आता है और वह खूब लहलहाती है लेकिन अंत तू उसे पीली हालत में देखता है तो उसके बाद वह गला हुआ चूरा हो जाती है और आख़िरत में ऐसे दुनियादारों के लिए बहुत कठोर दंड निर्धारित है और कुछ के लिए अल्लाह तआला से माफी और अल्लाह तआला की रज़ा निर्धारित है और यह जीवन केवल एक धोखे का लाभ है।

अल्लाह तआला ने कुरआन में कई जगह इस ओर ध्यान दिलाया है बल्कि चेतावनी दी है कि दुनिया का जीवन और उसकी आसानियां उसकी सुविधाएं उसका धन दौलत ये सब अस्थायी चीजें हैं और उनकी स्थिति खेलकूद और दिल बहलावे के सामानों से अधिक कुछ नहीं। अल्लाह तआला से लापरवाह और अपने जीवन के उद्देश्य से अनजान व्यक्ति तो इन चीज़ों और इन बातों की तरफ झुक सकता है जो दुनियादारी की बातें हैं लेकिन एक मोमिन जिसके उच्च लक्ष्य हैं और होने चाहिए वह इन बातों से बहुत ऊंचा है और ऊंचा हो कर सोचता है और उच्च लक्ष्यों को और अल्लाह तआला की निकटता और उसके प्यार को तलाश करने की कोशिश करता है। हम जो इस ज़माने के इमाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार आए मसीह मौऊद और महदी मौऊद की जमाअत में शामिल होने और आप की बैअत में आने का दावा करते हैं हमारी सोच वास्तव में बहुत ऊंची होनी चाहिए। हम जो अहमदी कहलाते हैं वास्तविक अहमदी तभी बन सकते हैं जब हम अस्थायी और सांसारिक इच्छाओं और सुख को अपना लक्ष्य न बनाएं बल्कि दुनिया जो आजकल इन सुखों में गिरफ्तार और कदम कदम पर शैतान ने अपने ऐसे अड्डे बनाए हुए हैं जो हर व्यक्ति को जो इस दुनिया में रहता है अपनी तरफ आकर्षित करने की कोशिश करता है इससे पूरी कोशिश करके हमें बचना चाहिए। हमारा लक्ष्य सांसारिक धन प्राप्त करने के लिए और सांसारिक सुख का लाभ उठाना कभी नहीं होना चाहिए क्योंकि इन चीजों का अन्त अच्छा नहीं। अल्लाह तआला इन सांसारिक चीज़ों का उदाहरण देते हुए फरमाता है कि यह पनपने वाली फसल की तरह हैं लेकिन अंत सूख कर चूरा हो जाती हैं और तेज़ हवाएं इसे उड़ा ले जाती हैं। इसी तरह दुनियादारों का अंजाम होता है। न उनके माल तथा दौलत की बहुतायत उनके काम आती हैं न उनकी औलादें उनके काम आती हैं कुछ तो दुनिया में ही अपने धन और बच्चों से वंचित हो जाते हैं और अगर किसी के बाहरी प्रदर्शन सांसारिक लिहाज़ से बेहतर लगता भी है तो भविष्य में जो उनका हिसाब किताब होना है वह केवल सांसारिक व्यर्थ कामों में पड़ने की वजह से और ख़ुदा तआला और धर्म का क्षेत्र खाली छोड़ने और खाली होने के कारण और उसके द्वारा अधिक ध्यान देने की वजह से उन्हें पीड़ा में पीड़ित करता है। हाँ कुछ की कुछ नेकियां ऐसी भी होती हैं कि अल्लाह तआला अपनी माफी की चादर में ढांप कर उनसे माफी का व्यवहार कहता है। अल्लाह तआला की दया बहुत व्यापक है इसके अधीन कुछ लोग अल्लाह तआला की ख़ुशी अपनी कुछ नेकियों के कारण प्राप्त करने वाले बन जाते हैं लेकिन याद रखना चाहिए अल्लाह तआला यह फरमाता है कि तुम यह याद रखो कि जीवन को सब कुछ नहीं समझो। वास्तविक जीवन मृत्यु के बाद का जीवन है। इसलिए अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने के लिए अन्जाम अच्छा होने के लिए अल्लाह तआला से संबंध और उसकी आज्ञाओं पर चलना चाहिए और जब इंसान अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने की कोशिश करे उसके बताए हुए रास्ते पर चले तो न केवल अन्जाम अच्छा होता है बल्कि यह दुनिया भी उसे मिल जाती है। अल्लाह तआला यह नहीं कहता कि तुम अल्लाह तआला की पैदा की हुई सांसारिक ख़ुशी से लाभ न उठाओ लेकिन अल्लाह तआला यह निश्चित रूप से कहता है कि इन सांसारिक चीज़ों को प्राप्त करने में इतना न डूब जाओ कि तुम्हें धार्मिक कर्तव्यों और अल्लाह तआला के कर्तव्यों को अदा करने की तरफ ध्यान ही न रहे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि "जो लोग ख़ुदा तआला की ओर से आते हैं वे दुनिया छोड़ देते हैं इसका मतलब यह है कि दुनिया को अपना गंतव्य और भरसक प्रयत्न नहीं ठहराते।" (केवल दुनिया ही उनके ध्यान में नहीं होती और जब यह नहीं होता तो फरमाया कि) "दुनिया उनकी सेवक और

ग़ुलाम बन जाती है" और फिर फरमाते हैं "जो लोग इस के विपरीत इस दुनिया को अपना मूल गंतव्य मानते हैं चाहे वह दुनिया कितना भी प्राप्त कर लें अंतत: अपमानित होते हैं।"

(मलफूज़ात जिल्द 7 पृष्ठ 317 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

यह बात जो आप ने फरमाई यह केवल उस ज़माने की या पुरानी बात नहीं है बल्कि आजकल भी जबकि विचार किया जाता है कि दुनिया की वित्तीय प्रणाली बड़ी स्थिर है और न केवल यह बल्कि बड़े बड़े बैंक भी मौजूद हैं इस के बावजूद यह होता है कि बैंकों के सहारे व्यवसाय और व्यापार करने वाले अपने व्यवसायों और कारोबारों से हाथ धो बैठे हैं बल्कि यह भी देखने में आता है कि बैंक भी बहुत नुकसान में जाना शुरू हो जाते हैं जिसके परिणाम में दैनिक ख़बरें आ रही होती हैं कहीं बैंकों ने अपने कर्मचारियों को निकाल दिया है इसमें कमी कर रहे हैं कहीं वह शहरों में अपनी शाखाएँ बंद कर रहे हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियां अपने कर्मचारियों को निकाल देती हैं। कई कंपनियां अपने कर्मचारियों और फिर बैंक भी जिन्होंने उधार दिए हैं अदालतों में घसीटते हैं जहां उन्हें अपने व्यवसायों को दिवालिया साबित करना पड़ता है। अपने आप को बैंक रिपट घोषित करना पड़ता है। उनकी संपत्तियां बिक जाती हैं और वह कौड़ी कौड़ी के मोहताज हो जाते हैं। 2008 ई में जो आर्थिक गिरावट हुई इसके प्रभाव अभी तक चल रहे हैं। बड़े व्यवसाय दिवालिया हो गए यहां तक कि सरकारें भी प्रभावित हुईं। तेल पैदा करने वाले देश समझते थे कि हमारा यह धन कभी खत्म ही नहीं हो सकता लेकिन हो गया। क्या हुआ उनके साथ।? वहाँ भी सरकारों को अपने खर्च कम करने पड़े अपने कर्मचारियों को निकालना पड़ा मुसलमान देशों का दुर्भाग्य है कि अल्लाह तआला ने उन्हें जिस धन से सम्मानित किया वहाँ के राजाओं और शासकों और राजनीतिक नेताओं ने बजाय अल्लाह तआला की आज्ञाओं पर चलते हुए इसे अल्लाह तआला ख़ुशी का माध्यम बनाते अपनी अय्याशियों में लुटाया और लुटा रहे हैं। जो तेल की दौलत और दूसरे धन आदमी को बचाने और ग़रीब मुसलमान देशों और अन्य देशों को भी पैरों पर खड़ा करने की कोशिश करते, अपने देशों के भूखों और नंगों की भूख और नग्नापन समाप्त करते, उन्होंने इस ओर ध्यान नहीं दिया और अपनी तिजोरियों को भरने में जुट गए और अभी तक यही हाल है जिसका नतीजा यह निकल रहा है कि दुनिया के सामने भी अपमानित हो रहे हैं लेकिन समझते नहीं और परलोक पर भी नज़र नहीं कर रहे जिस सज़ा से अल्लाह तआला ने डराया है जो सख्त और अपमानित करने वाला अज़ाब है।

अत: बहरहाल इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि दुनिया का धन चाहे व्यक्ति से संबंध रखने वाला है या बड़े बिजनेस मैन या व्यापार की कंपनियों से संबंध रखने वाला है या इसका सरकारों के संबंध है। इसका दुरुपयोग अल्लाह तआला की पकड़ में लाता है। चाहे तो वह इस दुनिया में और अगले जहान में दोनों जगह सज़ा दे चाहे तो लोग इस दुनिया में अस्थायी लाभ उठा लेते हैं अगले जहान में सज़ा पाऐं।

अत: बड़े भय का स्थान है जो हर बुद्धिमान व्यक्ति को एक वास्तविक मुसलमान को विशेष रूप से उसे जो अल्लाह तआला में विश्वास रखता है हमेशा अपने मद्देनज़र रखना चाहिए और केवल ऊपरी तौर पर ही नहीं बल्कि इबादतों और अल्लाह तआला की आज्ञाओं को मानने का एक दर्द और कोशिश होनी चाहिए। कहने वाले तो कह देंगे कि हम तो नमाज़ें भी पढ़ते हैं इबादतें भी करते हैं रोज़ा भी रखते हैं। अगर अल्लाह तआला ने जो नेअमतें पैदा की हैं इसके अधिग्रहण की कोशिश करते हैं तो इसमें क्या बुराई है।? एक तो इबादतों में ईमानदारी और श्रद्धा होनी चाहिए यही अल्लाह तआला ने फरमाया कि तुम्हारी इबादतें भी ईमानदारी और श्रद्धा वाली होनी चाहिए दूसरे अल्लाह तआला की ख़ुशी सृष्टि के अधिकार भी अदा करना चाहिए। हमारे यहां क्या है।? देशों के राजा सैरों पर जाने के लिए ज़हाजों का बेड़ा साथ ले जाते हैं बड़े बड़े सामान साथ लेकर जाते हैं। कई लाख डॉलर की लागत उनके ऊपर होते हैं और अपने देश के ग़रीब ऐसे भी हैं जिन्हें एक वक्त की रोटी भी मुश्किल से मिल रही है। यह अल्लाह तआला के हुक्म से दूरी है। एक ओर अल्लाह तआला का नाम लेना और दूसरे उस का नाम लेकर फिर जो आदेश हैं उन से इनकार करना। यह तो अल्लाह तआला की सज़ा का दोषी बनाता है और यह व्यर्थ और बेकार है। ज़ाहरी खेलकूद है और ज़ाहरी सुन्दरता और गौरव है। अपने माल को अवैध व्यक्त करना है

और ऐसे ही लोगों के बारे में एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "ज़ाहरी नमाज़ रोज़ा अगर उसके साथ ईमानदारी और श्रद्धा न हो कोई ख़ूबी अपने अंदर नहीं रखती।"

(मलफूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 420 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

और ऐसे लोगों की नमाज़ों के बारे में ही अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है कि فَوَيۡلٌ لِّلۡمُصَلِّيۡنَ (अलमाऊन 5) कि ऐसे नमाज़ियों पर हलाकत हो और वास्तव में तो अल्लाह तआला ऐसी इबादतें और ऐसे काम हमसे चाहता है जो हमारी आध्यात्मिक हालत में सुधार पैदा करने वाली हो। बन्दों के अधिकार इस भावना के अधीन हम अदा करने वाले हों जो हमारे अंदर दर्द पैदा करें न कि हम किसी पर एहसान कर रहे हों और ऐसी इबादतें भी अल्लाह तआला का फज़ल ग्रहण करने वाला बनती हैं और ऐसी दौलत भी अल्लाह तआला के फज़लों का वारिस बनाती है।

अल्लाह तआला ने जैसा कि मैंने कहा दुनिया के धन और दुनिया कमाने से मना नहीं फरमाया। अल्लाह तआला ने जो नेअमतें पैदा की हैं बेशक मोमिनों के लिए वैध हैं बशर्ते कि जायज़ माध्यम से प्राप्त की जाएं और वह धर्म के रास्ते में और अल्लाह तआला के प्राणियों के हक़ अदा करने के रास्ते में रोक न बनें। इबादतों में रोक न बनें।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी उम्मत से इस बात की चिंता थी कि जो पवित्र क्रांति आप ने सहाबा में पैदा की और उन्होंने धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता पैदा करने की भावना को जिस तरह समझा वह भविष्य में आने वाले मुसलमानों में समाप्त न हो जाए ख़त्म न हो जाए। इसलिए एक मौका पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं अपनी उम्मत के बारे में जो बात सबसे अधिक आशंका करता हूँ (मुझे खतरा है, डर या चिंता है, डर तो नहीं चिंता है।) वह यह है कि मेरी उम्मत इच्छाओं का पालन करने लग जाएगी और सांसारिक उम्मीदों के लिए लंबी चौड़ी परियोजना बनाने में लग जाएगी और उनकी इच्छाओं के पालन के परिणाम में वह सच्चाई से दूर चली जाएगी। दुनिया कमाने की परियोजना आख़िरत से असावधान कर देंगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हे लोगो! यह दुनिया सफर का सामान बांध चुकी है और आख़िरत भी आने के लिए तैयारी पकड़ चुकी है दोनों तरफ से सफर शुरू है। दुनिया अपने अन्जाम की तरफ जा रही है आख़िर क़यामत आनी है और आख़िरत में भी हिसाब होना है वहाँ भी तैयारी शुरू है और फरमाया कि और इन दोनों में से प्रत्येक के कुछ ग़ुलाम और बन्दे हैं। दुनिया के भी कुछ ग़ुलाम हैं कुछ आख़िरत की चिंता करने वाले भी हैं। फरमाया अत: अगर तुम में सामर्थ्य है कि दुनिया के ग़ुलाम न बनो, तो ज़रूर ऐसा करो। तुम इस समय कर्म के घर में हो और अब हिसाब का समय नहीं आया लेकिन कल तुम आख़िरत के घर में जाओगे और वहाँ कोई कर्म नहीं होगा।

(बहारुल अनवार शेख मुहम्मद बाकिर मज्लसी किताबुल ईमान हदीस 63 पृष्ठ 263-264 प्रकाशक अलइमारत बैरूत 2008ई)

जो कर्म होने हैं जिनका फल मिलना है वह इसी दुनिया में मिलना है इसलिए अपने कर्मों को ठीक करो।

अत: यह दुनिया कर्म का घर है इस दुनिया के कर्म अगले जहान में इनाम या सज़ा का माध्यम बनेंगे। तो क्या ही भाग्यशाली हैं हम में से जो अल्लाह तआला की इस बात को याद रखें कि यह दुनिया बस व्यर्थ और खेल तमाशा है और सुन्दरता की अभिव्यक्ति और एक दूसरे पर अपने माल और औलाद की वजह से गर्व करना है और उसकी स्थिति क्या है किसी सूखे हुए घास फूस से अधिक कोई स्थिति नहीं जो सूखी है और उखड़ जाती हो और हवाएं इसे उड़ा ले जाती हैं। वास्तविक बात अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करना है और यही बात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाई है कि नेक अमल करो ताकि अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने वाले बनो।

सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम हर समय इस बात की तलाश में रहते थे कि कैसे और कौन से माध्यम से हम जानें और समझें जो हमें अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने वाले बनाएँ और नेक अमल करने वाले बनाएँ। और वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस बारे में पूछते भी थे। इसलिए इसी उद्देश्य से एक बार एक व्यक्ति ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि हे अल्लाह के रसूल! मुझे ऐसा काम बताइए जब उसे करूँ तो अल्लाह तआला मुझ से प्यार करने लगे और बाकी लोग मुझे चाहने लगें। अल्लाह तआला का प्यार भी हो और बन्दे भी मुझे पसंद करें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि दुनिया को न चाहने वाला और बेनियाज़ हो जाओ। अल्लाह तआला तुझ से प्रेम करने लगेगा। जो कुछ लोगों के पास है अर्थात सांसारिक धन दौलत। उसकी इच्छा छोड़ दो लोगों की तरफ उत्सुकता भरी नज़र से न देखो। लोगों के मालों को लालच भरी नज़र से न देखो। लोग तुझ से प्रेम करने लग जाएंगे।

(सुनन इब्ने माजा हदीस 4102)

दुनिया से बे रग़बती यह नहीं है कि समाज से मनुष्य कट जाए इस दुनिया से बिल्कुल कट जाए। शादी ब्याह भी न करो बच्चों के अधिकार भी अदा न करे, पत्नी के अधिकार भी अदा न करे जो व्यवसाय में हो उसे भी छोड़ दो और हाथ पर हाथ रख के बैठ जाओ। सांसारिक कार्यों में मेहनत न करो। साधु बन जाओ। हरगिज़ इसका यह मतलब नहीं। इस्लाम यह नहीं चाहता। हमारे सामने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उस्वा हुस्ना है। आप ने शादी भी की। आप ने पत्नियों के अधिकार भी अदा किए। आपकी संतान भी हुई। आप ने बच्चों के अधिकार भी अदा किए। आपके पास धन भी आया। बकरियों के झुंड के झुंड आपके पास होते थे जो रिवायतों में आता है किई बार आप ने बिना किसी चिंता के एक काफिर को दे दिए। कि अगर तुम्हें इतने ही पसन्द हैं और इतनी उत्सुकता से देख रहे हो ले जाओ उस का नतीजा यह हुआ कि वह मुसलमान हो गया।

(सहीह मुस्लिम हदीस 6020)

लेकिन आप ने इन सारी चीज़ों के होने के बावजूद भी अल्लाह तआला और बन्दे का हक़ अदा किए और इन चीज़ों को केवल सामने नहीं रखा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम्हारे लिए मेरी सुन्नत का पालन करना भी आवश्यक है। साधु नहीं बन जाना। दुनिया में भी रहना है इन बातों को सामने भी रखना है क्योंकि मैं यह करता रहा हूँ।

(सुनन निसाई हदीस 3219)

इसलिए हमें समझना चाहिए। इसका मतलब यह है कि दुनिया हमारी इबादतों में आड़े न आए। हमें अल्लाह तआला की आज्ञाओं का पालन करने से न रोके। धन की कमाई में व्यस्तता हमें अल्लाह तआला का हक़ अदा करने से लापरवाह करने वाली न हो और इसी तरह अन्य धन और संपत्ति पर उत्सुकता भरी नज़र नहीं होनी चाहिए क्योंकि उत्सुकता की नज़र ही है जो फिर दूसरों को नुकसान पहुंचाने की भी सोच पैदा करती है और दुनिया में जो दंगा है वह भी इसी उत्सुकता की वजह से है। बड़ी-बड़ी ताकतें छोटे देशों पर केवल इसलिए नज़र रख रही हैं कि यह हमारे अधीन होंगे और उनका जो धन है उनके जो प्राकृतिक संसाधन हैं उन से हम लाभ उठाएं। अत: जब दूसरों के धन पर नज़र हो तो दुनिया में दंगे भी इसी लिए पैदा होते हैं चाहे वे लोगों के बीच हों या बड़ी सरकारों के बीच में हों। इसलिए फरमाया तुम में संतोष उत्पन्न होना चाहिए। दूसरों को उत्सुकता से न देखो। हाँ अपनी क्षमताओं और अपने कौशल को काम में लाओ। मेहनत करो और फिर जब इंसान मेहनत करे तो धन कमाने में कोई हर्ज नहीं है। बशर्ते यह माल अल्लाह तआला और उसके बन्दे के हक़ अदा करने में भी रोक न बने।

दुनिया से दिल न लगाने का विवरण ख़ुद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस तरह फरमाया है कि फरमाया कि दुनिया से दिल न लगाना और नेकी यह नहीं कि आदमी अपने ऊपर किसी हलाल को हराम कर ले। जो बातें अल्लाह तआला ने हलाल की हैं उन्हें अपने ऊपर हराम करना यह दुनिया से बे रग़बती का मतलब नहीं है और इस का यह मतलब है कि जो अल्लाह तआला ने तुम्हें माल दिया है उस को को नष्ट कर दो। फरमाया बल्कि नेकी यह है कि तुम्हें अपने माल से अधिक ख़ुदा के पुरस्कार और माफी पर विश्वास हो। अपने माल पर भरोसा न रखें। अल्लाह तआला पर विश्वास हो उस पर भरोसा हो और जब तुम पर कोई मुसीबत आए तो उसका जो इनाम मिलना है उस पर तुम्हारी निगाह जम जाए और तुम दु:ख को इनाम का माध्यम समझो।

(सुनन इब्ने माजा हदीस 4100)

इंसान पर मुसीबतें आती हैं। कठिनाइयां आती हैं। इस वजह से जो पैसे बर्बाद हुआ है उसके ऊपर रोने धोने न लग जाओ बल्कि समझो कि इसलिए शायद अल्लाह तआला मेरा परीक्षा ले रहा है और इसका भी मुझे इनाम मिलेगा। अत: मूल बात यह है कि सांसारिक मालों के नुकसान पर इतना रोना धोना व्यक्ति न करे जिससे शिर्क की गंध आने लगे। कई व्यावसायिक लोग होते हैं वित्तीय नुकसान पर होश खो बैठते हैं कुछ आत्म हत्याएं कर लेते हैं। अगर ख़ुदा तआला पर भरोसा हो और संतोष हो तो कभी यह स्थिति पैदा नहीं होती।

अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम मोमिनों से अपनी उम्मत के लोगों से यह नेकी और दुनिया से दिल न लगाने की गुणवत्ता चाहते हैं। अल्लाह तआला की कृपा है कि इस ज़माने में अल्लाह तआला ने कई अहमदियों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की वजह से यह एहसास प्रदान फरमाया है कि दुनिया के नुकसान उनके सामने कोई हैसियत नहीं रखते और वे समझते हैं कि ऐसे हालात में अल्लाह तआला की तरफ पहले से बढ़कर लौटना चाहिए। इसलिए हम देखते हैं कि पाकिस्तान में भी और कुछ और जगहों पर भी अहमदियों के लाखों और करोड़ों के व्यवसाय विरोधियों ने नष्ट किए और जलाए बल्कि एक समय में पाकिस्तान के एक प्रधान मंत्री ने यह भी कहा कि अहमदियों हाथ में कटोरा पकड़ा दूंगा और अब यह मांगते फिरेंगे क्योंकि मैंने कटोरा पकड़ा दिया है लेकिन अल्लाह तआला पर भरोसा रखने वाले इन अहमदियों ने न सरकार से मांगा न कटोरा लेकर किसी और से मांगा बल्कि अल्लाह तआला पर भरोसा के कारण वे हज़ारों और लाखों का कारोबार जो उन का नष्ट हुआ था वह करोड़ों में बदल गया।

अत: ये उदाहरण जहां अहमदियों के विश्वास को मज़बूत करने के लिए हैं वहाँ अपने हालात की वजह से बाहर निकले हुए अहमदियों के लिए अन्य देशों में विकसित देशों में आए हुए अहमदियों के लिए यह भावना पैदा करने वाले भी होने चाहिए कि पाकिस्तान से बाहर आकर अल्लाह तआला ने जो वित्तीय हालत में सुधार किया है यह केवल मात्र अल्लाह तआला की कृपा है। अत: जब यह अल्लाह तआला की कृपा है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की बरकत की वजह से है तो हमारी बेहतर स्थिति किसी प्रकार के गौरव का माध्यम नहीं होने चाहिए। हमें उस पर कोई गर्व नहीं होना चाहिए। हमें धन और दौलत पर दुनियादारों की तरह गिरना नहीं चाहिए। हमें उत्सुक की दृष्टि से दूसरों के माल को देखना नहीं चाहिए बल्कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फरमान के अनुसार अगर किसी चीज़ को ईर्ष्या की निगाह से देखना है तो धार्मिक दृष्टि से अपने से बेहतर को हमें देखना चाहिए (सुनन अत्तरिमज़ी हदीस 2512) और उसे देखकर फिर उस जैसा बनने की कोशिश करनी चाहिए या उस से भी बेहतर बनने की कोशिश करनी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी बड़े विस्तार से इस विषय का वर्णन किया है। कि हमें दुनिया के कामों और मालों को किस हद तक अपनाना चाहिए कुरआन की शिक्षा के प्रकाश में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेशों को समझते हुए सबसे अधिक समझ और एहसास तो आप को था

अत: एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि "ख़ुदा तआला ने दुनिया के कामों को वैध रखा है क्योंकि इस तरह से भी परीक्षा आती है।" (मतलब है अगर सांसारिक काम कोई नहीं कर रहा। वित्तीय स्थिति बहुत बुरी हैं तब भी परीक्षा आ जाती है। आदमी कठिनाइयों में गिरफ्तार हो जाता है और फरमाया कि इसी परीक्षा के कारण मनुष्य फिर चोर भी बन जाता है जुआ खेलने वाला भी बन जाता है जुआ खेलने लग जाता है। ठग बन जाता है। डकैत बन जाता है और क्या क्या बुरी आदतें धारण कर लेता है। वित्तीय कमज़ोरी भी बुराइयों से पीड़ित कर देती है।) फरमाया "लेकिन प्रत्येक चीज़ की एक सीमा होती है। सांसारिक कामों को इस सीमा तक धारण करो कि वह धर्म की राह में तुम्हारे लिए मदद का सामान पैदा कर सकें और मूल गंतव्य इसमें धर्म ही हो" (अर्थात इसका उद्देश्य तुम्हारा धर्म प्राप्त करना हो। अर्थात कि धर्म कभी भी गौण स्थिति में न रहे। दुनिया कमाओ दुनिया का लाभ उठाओ लेकिन हर समय अल्लाह तआला का भय और डर तुम्हारे सामने हो। धर्म की शिक्षा तुम्हारे सामने हो।) फरमाया कि "इसलिए हम सांसारिक कामों को भी मना नहीं करते और यह भी नहीं कहते कि दिन रात दुनिया के धंधों और बखेड़ों में जुट कर ख़ुदा तआला का क्षेत्र भी दुनिया ही से भर दो।" (अर्थात ख़ुदा याद ही न रहे। इबादतों के समय भी सांसारिक चीज़ों में शामिल रहो। नमाज़ों के समय में इंटरनेट पर व्यस्त हो। फिल्में देखने में व्यस्त हो या कोई और सांसारिक कार्यक्रम देख रहे हो। यह नहीं।) फरमाया कि "अगर कोई ऐसा करता है तो वह वंचित रहने के माध्यम अपने आप को पहुंचाता है और उसकी जीभ पर केवल दावा ही रह जाता है।" (फिर दावा है, बैअत की वास्तविकता नहीं है ईमान नहीं है।) "अत: ज़िन्दों की सोहबत में रहो ताकि जीवित ख़ुदा तआला का जलवा तुम को नज़र आए।"

(मलफूज़ात भाग 2 पृष्ठ 73 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर एक मौका पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि "कोई यह न समझ ले कि इंसान दुनिया से कोई उद्देश्य और सम्बन्ध ही न रखे।" फरमाया कि "मेरा यह मतलब नहीं है और न अल्लाह तआला दुनिया को प्राप्त करने पर प्रतिबंध लगाता है बल्कि इस्लाम ने रहबानीत को मना किया है। यह डरपोकों का काम है" (दुनिया से हट कर रहोगे तो यह भी डरपोकों का काम है।) "मोमिन के रिश्ते दुनिया के साथ जितने व्यापक हों वह उस के उच्च पदों को प्राप्त करने के कारण होते हैं" (कि दुनिया के संबंध भी हों लेकिन दुनिया गंतव्य भी न हो) "क्योंकि उसका लक्ष्य धर्म होता है और दुनिया, उसका धन दौलत धर्म का सेवक होता है।

अत: मूल बात यह है कि दुनिया अपने आप में गंतव्य न हो बल्कि दुनिया को प्राप्त करने में मूल उद्देश्य धर्म हो और ऐसे रूप में दुनिया को प्राप्त किया जाए कि वह धर्म की सेवक हो। जैसे व्यक्ति किसी जगह से दूसरी जगह जाने के लिए यात्रा के लिए सवारी और सफर के सामन को साथ लेता है तो उसका गंतव्य का मूल उद्देश्य पहुंचना होता है न कि सवारी और सफर की आवश्यकताएं। इसी तरह से मनुष्य दुनिया को प्राप्त करे लेकिन धर्म का सेवक समझकर।"

फिर इसी कर्म में आप कुरआन में अल्लाह तआला की सिखाई हुई यह दुआ कि رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنۡیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الۡاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً (अल्बकर: 202) का ज़िक्र करते हुए फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने जो यह शिक्षा फरमाई है कि رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنۡیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الۡاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً इस में भी दुनिया को प्राथमिकता दी है लेकिन किस दुनिया को? "हसनते द्दुनिया" को। ऐसी दुनिया को इस दुनिया की नेकियों को जो आख़िरत में नेकियों का कारण हो जाए। इस दुआ की शिक्षा से साफ समझ में आता है कि मोमिन को दुनिया के धारण करने से आख़िरत की नेकियों का ख्याल रखना चाहिए और साथ ही "हसनतद्दुनिया" शब्द में इन सभी दुनिया के उत्कृष्ट माध्यमों की चर्चा आ गई जो एक मोमिन मुस्लिम को प्राप्त कर के दुनिया के लिए धारण करनी चाहिए। दुनिया प्रत्येक तरीके से प्राप्त करो जिसके धारण करने से भलाई और ख़ूबी ही हो न वह तरीका जो किसी दूसरे मानव जाति के कष्ट का कारण हो न साथियों में किसी शर्म और लज्जा का कारण। ऐसी दुनिया वास्तव में आख़िरत की भलाइयों का कारण बन जाती है।"

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 91-92 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर आज़ाब और जहन्नम का ज़िक्र करते हुए आप फरमाते हैं कि "समझना चाहिए कि जहन्नम क्या चीज़ है? एक जहन्नम तो वह है जिस का मरने के बाद अल्लाह तआला ने वादा किया है दूसरे यह जीवन भी अगर ख़ुदा तआला के लिए न हो तो जहन्नम ही है। अल्लाह तआला ऐसे व्यक्ति को असुविधा से बचाने और आराम देने के लिए मुतवल्ली नहीं होता यह विचार मत करो कि कोई ज़ाहरी धन या हुकूमत, धन या सम्मान, औलाद की अधिकता किसी व्यक्ति के लिए कोई राहत या संतुष्टि और संतोष का कारण हो जाती है और वह मूल रूप से जन्नत ही होता है" (अर्थात यह चीज़ें संतोष का कारण नहीं होतीं न उनसे जन्नत मिलती है) फरमाया "हरगिज़ नहीं।" (ऐसी बातें जन्नत प्रदान नहीं करतीं। फरमाया कि) "वह संतुष्टि और आराम और संतोष जो जन्नत के पुरस्कार हैं इन बातों से नहीं मिलते वह ख़ुदा तआला में जीवित रहने और मरने से मिल सकते हैं" (वह तभी मिल सकती हैं जब प्रत्येक समय अल्लाह तआला सामने हो सांसारिक नेकियां भी अल्लाह तआला की आज्ञाओं के अनुसार मनुष्य प्राप्त करे अत: आख़िरत की नेकियां भी तभी मिल सकती हैं और वह ख़ुदा जब तक सामने न हो हर समय यह विचार न हो कि ख़ुदा मुझे देख रहा है तब तक मनुष्य फिर पालन नहीं कर सकता।) फरमाया "जिसके लिए अंबिया अलैहिमुस्सलाम विशेष रूप से इब्राहीम और याकूब अलैहिमुस्सलाम की यही वसीयत थी कि فَلَا تَمُوۡتُنَّ اِلَّا وَ اَنۡتُمۡ مُّسۡلِمُوۡنَ(अल्बकर: 133) (कि कभी नहीं मरो लेकिन इस हालत में कि तुम आज्ञाकारी हो। इसका मतलब भी यही है अब आदमी को तो नहीं पता मरना और जीना न मनुष्य के अपने अधिकार में है। मतलब यह है कि हर समय अल्लाह तआला के आदेशों पर नज़र हो और अख़िरत की चिंता हो।) फरमाया "दुनिया के आन्नद तो एक प्रकार की नापाक लालच पैदा करके मांग और प्यास बढ़ा देते हैं।" (दुनिया के आन्नद क्या हैं? दुनिया की मांग और प्यास को बढ़ाने वाले हैं।) "पानी मांगने वाले मरीज़ की तरह प्यास नहीं बुझती।" (जिस तरह एक मरीज़ जो प्यास का रोगी हो और वह पानी पीता चला जाता है यहाँ तक कि पानी पी पी कर खत्म हो जाता है और उसकी प्यास नहीं बुझती इसी तरह दुनिया की मांग का मामला है दुनिया की मांग तो कभी खत्म ही नहीं होगी) फरमाया "यहां तक कि वे हलाक हो जाते हैं। अत: व्यर्थ आकांक्षाओं और हसरतों की आग भी उस जहन्नम की आग में से है।" (सांसारिक इच्छाएं हैं हसरतें हैं तो यह भी आग हैं और यह जहन्नम है।) फरमाया कि "जो इंसान के दिल को राहत और करार नहीं लेने देती बल्कि इसे एक दुविधा और चिन्ता में परेशान रखती है।" फरमाया "इसलिए मेरे दोस्तों की नज़र से यह बात कभी छुपी नहीं रहे कि इंसान धन या दौलत या और पुत्र (पत्नी और बच्चे) मुहब्बत के जोश और नशे में ऐसा पागल और दीवाना न हो जाए कि इसमें और ख़ुदा तआला में एक पर्दा पैदा हो जाए।" (अल्लाह तआला से दूरी हो दाए इन बातों की वजह) फरमाया कि "माल और औलाद इसलिए तो फित्ना कहलाती है उनसे भी व्यक्ति के लिए एक जहन्नम तैयार होता है और जब वह उन से अलग किया जाता है तो बहुत चिंता और घबराहट प्रकट करता है और इस तरह यह बात कि نَارُ اللّٰہِ الۡمُوۡقَدَۃُ ۙ الَّتِیۡ تَطَّلِعُ عَلَی الۡاَفۡـِٕدَۃِ (अलहमज़: 7-8) (अर्थात अल्लाह की खूब भड़काई हुई आग है, जो दिल के अंदर तक जा पहुंचती है) फरमाया कि "उद्धरित रूप में नहीं रहती बल्कि उचित रूप धारण कर लेता है। अत: यह आग जो इंसान के दिल को जला कर कबाब कर देती है और एक जले हुए कोयले से भी काली और अंधेरी बना देती है यह वही अल्लाह से ग़ैर की मुहब्बत है।

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 101-102 1985 ई प्रकाशन यू.के)

अल्लाह तआला के अलावा भी कोई मुहब्बत है तो वह आग बन जाती है इस दुनिया में जहन्नम बन जाती है ।

अत: हमें इन देशों की सुविधाएं और आराम ख़ुदा तआला की इबादत से बेखबर करने का माध्यम न हों। उसके हक़ अदा करने से वंचित करने वाले न हों। हमारे अच्छे हालात हमारी वित्तीय बेहतर स्थिति जो हैं हमें अपने कमज़ोर वित्तीय स्थिति वाले भाइयों के हक़ अदा करने से वंचित करने वाली कभी न हों। इसी तरह इस्लाम के प्रकाशन और इस्लाम के प्रचार में भी हम अपनी भूमिका निभाने वाले हों। न कि इस लक्ष्य को भूल जाएं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का उद्देश्य यही है कि अल्लाह तआला के भी हक़ अदा किए जाएं और बन्दों के भी हक़ अदा किए जाएं और तब्लीग़ का जो अधिकार है उद्देश्य है इस्लाम के प्रकाशन का उसे पूरा किया जाए। इसी से धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करने के उद्देश्य हम पूरा कर सकते हैं। अल्लाह तआला करे कि हम हमेशा अल्लाह तआला की ख़ुशी की तलाश में रहें और दुनिया के धोखे वाला जीवन कभी हम पर हावी न हो। हम इस दुनिया के जहन्नम से भी बचने वाले हों और आख़िरत के जहन्नम से भी बचने वाले हों। अल्लाह तआला की कृपा और ख़ुशी हमारे लिए दुनिया को जन्नत बना दे और आख़िरत में भी हम जन्नत पाने वाले हों।

अभी नमाज़ के बाद दो जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाउंगा एक नमाज़ जनाज़ा है आदरणीय बिशारत अहमद साहिब पुत्र आदरणीय मुहम्मद अब्दुल्ला साहिब ख़ानपुर ज़िला रहीम यार खान जिन्हें 3 मई को शहीद कर दिया गया। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलेहि राजेऊन। इन का विवरण कुछ इस तरह हैं कि बिशारत अहमद साहिब शहीद का घर ख़ानपुर ग्रीन टाउन में है और उनका पेट्रोल पंप का कारोबार था जो चार पांच किलोमीटर की दूरी पर है। 3 मई को यह रात आठ बजे सामान्य के अनुसार अपने पेट्रोल पंप से बाइक पर घर के लिए रवाना हुए। अभी एक किलोमीटर की दूरी ही तय की थी कि अज्ञात लोगों ने रोक कर बड़े करीब से आप को गोली मारी जो दाईं ओर की कनपटी के पास से लग कर दूसरी तरफ निकल गई जिससे मौके पर ही आप शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलेहि राजेऊन। उनके दस मिनट बाद उन के दामाद वह भी पेट्रोल पंप से घर के लिए रवाना हुए। उन्होंने वहाँ जाकर देखा कि रास्ते में लोगों की भीड़ खड़ी है यह भी रुके देखा तो उनके ससुर वहाँ गिरे पड़े थे। उन्होंने तुरंत एम्बुलेंस बुलाई लेकिन उसके आने से पहले ही शहीद की मृत्यु हो चुकी थी

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

पहले तो उनके दामाद यही समझते रहे कि सड़क पर यह कोई दुर्घटना हुई लेकिन बाद में रात को एक अहमदी डॉक्टर ने देखा तो कहा कि यह तो उनकी कनपटी पर गोली लगी हुई है। फिर पुलिस को बताया गया तो पोस्टमार्टम हुआ और फिर पुलिस ने यही कहा कि यह टारगेट किलिंग है और जो अहमदी होने के कारण आप को शहीद किया गया है। वहाँ पुलिस ने घटनास्थल से बाद में जा कर फिर गोली का खोल भी प्राप्त कर लिए। शहीद मरहूम के परिवार में अहमदियत का आरम्भ आप के पिता आदरणीय मुहम्मद अब्दुल्लाह साहिब के माध्यम से हुआ। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो के हाथ में पाकिस्तान बनने से पहले आप ने बैअत की थी और 1947 ई में आप का परिवार कादियान से हिजरत करके मियांवाली पाकिस्तान शिफ्ट हो गया। भक्कर में 1955 ई में शहीद का जन्म हुआ था। वहीं अपने गांव में उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की फिर उसके बाद चिनोट रबवा अहमद नगर में शिक्षा प्राप्त की इसके बाद तरबीला बांध में आप ने कुछ समय नौकरी की फिर कुछ समय के लिए दुबई चले गए। वहाँ से लौट कर कराची में रहने लगे और वहाँ कुछ अपना कारों आदि का व्यवसाय किया और 1985 ई में कराची की ख़राब स्थिति के कारण ख़ानपुर शिफ्ट हो गए वहाँ अपना पेट्रोल पंप बनाया। शहीद मरहूम अल्लाह तआला की कृपा से मूसी थे। शहादत के समय आपकी उम्र 62 साल थी। विभिन्न पदों पर सेवा की तौफ़ीक़ मिली। तीन साल तक सदर जमाअत ख़ानपुर रहे। एक लंबा समय सचिव अमूर आम्मा के रूप में सेवा की तौफ़ीक़ पाई। बेशुमार गुण थे। अत्यंत हंसमुख इंसान थे और दूसरों को भी ख़ुश रखते थे। जो भी जमाअत की ज़िम्मेदारी उन्हें दी जाती इसे पूरी मेहनत और शौक से अंजाम देते। ख़ानपुर में जो जमाअत अहमदिया की मस्जिद है वहाँ भी उन्होंने उसकी निगरानी आदि के लिए पर्याप्त काम करते थे और उसे बड़ा साफ रखना, उसके लॉन आदि का ख्याल रखना, सफाई का प्रबंध रोपण सब कुछ यह अपनी जेब से करते रहे। चंदा देने में बड़े नियमित थे। इसी तरह अपने परिवार का चंदा देने में नियमित थे और लेनदेन के मामले में हमेशा साफ रहा करते थे। नमाज़ों की पाबन्दी हमेशा रही। उनको ख़िलाफत से बड़ा संबंध था और बच्चों को भी हिदायत करते थे ख़िलाफत से जुड़े रहना उनकी पत्नी और दो बेटे और एक बेटी हैं। अल्लाह तआला शहीद के स्तर ऊंचा करे और उनकी नस्लों को भी हमेशा अहमदियत से जोड़े रखे ।

दूसरा नमाज़ जनाज़ा प्रोफेसर ताहिरा परवीन मलिक का है जो मलिक मुहम्मद अब्दुल्लाह साहिब मरहूम का बेटी थीं। यह प्रोफेसर थीं उन्हें भी 17 अप्रैल को उनके विश्वविद्यालय के एक कर्मचारी ने ही चाकू से वार करके शहीद कर दिया। यद्यपि वह चोरी के इरादे से आया था और जब देखा कि उन्होंने देख लिया है तो सि कारण से शहीद किया लेकिन पाकिस्तान में अहमदी होना तो दूसरों को वैसे ही लाइसेंस दे देता है कि तुम बेशक उन्हें मार दो तुम्हारे ख़िलाफ कोई कार्रवाई नहीं होगी और इसी वजह से कर्मचारी में भी साहस पैदा हुआ और जब उसने देखा कि मैं पकड़ा गया तो और यह घर में अकेले रहती थीं तो चाकू के वार कर के उन्हें शहीद कर दिया। उनका पति और पति का परिवार जमाअत से दूर हो गया था और तभी से वह अपने पति से अलग हो गई थीं और अकेली रहती थीं। बहुत योग्य थीं। फिर पिछले साल रिटायर होने के बावजूद विश्वविद्यालय ने उनकी योग्यता की वजह से उन्हें पुन: रीअंपलाई किया हुआ था। उनके परिवार में अहमदियत उनके दादा हज़रत मलिक हसन मुहम्मद साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से आई थी। उनके पिता मलिक अब्दुल्लाह साहिब भी वक्फे ज़िन्दगी थे और लंबा समय उन्हें विभिन्न कार्यालयों और कॉलेज में तालीमुल इस्लाम कॉलेज में भी दीनयात पढ़ाने की तौफ़ीक़ मिली। पाकिस्तान की स्थापना के समय उनके पिता को सुरक्षा विभाग में भी सेवा की तौफ़ीक़ मिली। 1953 ई में उनके पिता धर्म के लिए कैदी भी रहे थे। बड़ी योग्य महिला थीं। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा रबवा से प्राप्त की फिर उसके बाद लाहौर कॉलेज फॉर वुमन से बी. एस.सी किया फिर कृषि विश्वविद्यालय से एम. एस.सी और फिर कैलिफोर्निया से उन्होंने बोटनी और संयंत्र विज्ञान में एम.फिल किया। अल्लाह तआला मरहूम से माफी और दया का व्यवहार करे उनके स्तर बढ़ाए। हमेशा उनका जो सदमा था वह उन की बेटी थी जो अपने पिता के साथ ही जमाअत से अलग हो गई थी अल्लाह तआला उसे फिर जमाअत में शामिल होने की शक्ति दे और उनकी दुआएं उसे लगें। इस के साथ ही उन का नमाज़ जनाज़ा जैसा कि मैंने कहा नमाज़ के बाद पढ़ाऊंगा।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

इस समय शांति की तत्काल आवश्यकता है। आज के दिन यहाँ कनाडा और दुनिया के कुछ अन्य देशों में Remembrance Day के रूप में मनाया जा रहा है। और अगर पीछे मुड़कर द्वितीय विश्व युद्ध की तरफ नज़र दौड़ाएं तो हम देखते हैं कि लगभग सात करोड़ लोग अपनी जान से हाथ धो बैठे थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आज कई दशक बीत जाने के बाद भी जब मनुष्य इस समय होने वाली बर्बादी के बारह में सोचता है तो कांप उठता है। इस निर्णायक लड़ाई ने हमें बता दिया था कि इस दौर की लड़ाई का संबंध धर्म के साथ नहीं बल्कि यह वास्तव में लालच का चरम और शक्ति की न बुझने वाली प्यास है। यह एक ऐसी लड़ाई थी जिसमें दुनिया को पहली बार परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करना पड़ा। अमेरिका की ओर से उन परमाणु हथियारों के इस्तेमाल और उत्पीड़न का पैग़म्बरे इस्लाम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथ तुलना करते हुए बीसवीं सदी के मशहूर लेखक Ruth Cranston साहिब ने 1949 में अपनी पुस्तक World Faith में लिखा:

"मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने कभी भी युद्ध और ख़ून करने को प्रोत्साहित नहीं किया। आप ने जो लड़ाई लड़ी वह केवल प्रतिक्रिया थी। आप ने अपने अस्तित्व के लिए प्रतिक्रियात्मक युद्ध किया और अपने ज़माना के हथियारों और तरीके के अनुसार की। बेशक चौदह करोड़ लोगों पर आधारित एक ईसाई क़ौम जो आज एक बम द्वारा एक लाख बीस हज़ार असहाय लोगों को नष्ट कर देती है कभी एक ऐसे रहनुमा को घृणा की दृष्टि से नहीं देख सकती जिसने गंभीर परिस्थितियों में भी बमुश्किल पांच या छह सौ लोगों को मारा हो।"

यह किसी मुसलमान या पूर्वाग्रह की ओर ध्यान करने वाले मनुष्य का वर्णन नहीं बल्कि यह तो एक सम्मानजनक और तटस्थ ग़ैर मुस्लिम लेखक का बयान है। वास्तविकता तो यह है कि आज के दौर में होने वाले युद्ध धार्मिक कारणों के लिए नहीं लड़े जा रहे बल्कि उनका उद्देश्य भौगोलिक राजनीति और शक्ति और धन प्राप्त करना है। द्वितीय विश्व युद्ध के समय केवल अमेरिका के पास परमाणु हथियार थे, जबकि आज कई देश, जिनमें कुछ बहुत छोटे देश शामिल हैं, के पास परमाणु हथियार हैं। और इस बात की भी संभावना बढ़ती हुई नज़र आ रही है कि ये हथियार किसी ऐसे आतंकवादी समूह के हाथ लग जाएंगे जिनके लिए इन हथियारों का उपयोग बहुत आसान होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: तो इसमें तो कोई सवाल ही नहीं है कि दुनिया इस समय महान विनाश के किनारे पर खड़ी है। तीसरे विश्व युद्ध के बादल दिनोंदिन घने हो रहे हैं। इस प्रकार युद्ध के प्रभाव दशकों तक चलेंगे। बहुत अधिक विचार है कि स्थायी विकिरण के प्रभाव के परिणाम में बच्चे पीढ़ी दर पीढ़ी विकलांग या वंशागत दोषों के साथ पैदा होंगे। अत: इस समय मानवता के लिए बहुत आवश्यक है कि वह अपने भविष्य की रक्षा के लिए काम करे।

बड़ी शक्तियों को चाहिए कि वह इस वैश्विक संकट के लिए मुसलमानों को दोषी ठहराए चले जाने के बजाय ज़रा ठहर कर अपनी हालतों को भी देखें। दुनिया को इस समय प्रतिष्ठा के भूखे राजनेताओं, जो मुसलमानों को अपने देशों में प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने के इरादे कर रहे हैं, बजाय ऐसे शासकों की जरूरत है जो हमारे बीच मतभेद समाप्त करने वाले हों। और यह तभी हो सकता है जब पूर्ण न्याय, जिस का आधार निस्वार्थता हो, सभी प्रकार की लालच तथा उत्सुकता पर ग़ालिब आ जाए। अल्लाह तआला इन लोगों को बुद्धि और समझ पता फरमाए जो युद्ध और जंग को बढ़ावा दे रहे हैं और इस से पहले के बहुत देर हो जाए अल्लाह तआला उन्हें उनकी हरकतों के परिणाम समझने की तौफीक प्रदान फरमाए। अल्लाह तआला करे दुनिया के लोग अपने सृष्टा को पहचानें और शांति की स्थापना के लिए संघर्ष को पहचानें और एक दूसरे के अधिकार अदा करने का एहसास पैदा करें। अल्लाह तआला हम सबको एक बेहतर और उज्जवल भविष्य देखने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने संबोधन अंत में फरमाया: इन शब्दों के साथ मैं एक बार फिर आप सभी को निमंत्रण स्वीकार करने के लिए धन्यवाद करता हों। आप सभी को बहुत धन्यवाद। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब छह बजकर बावन मिनट तक जारी रहा। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का ख़िताब समाप्त हुआ, सभी मेहमानों ने खड़े होकर काफी देर तक तालियाँ बजाईं और यूँ अपनी हार्दिक भावनाओं को व्यक्त किया। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

(अनुवादक शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 8 June 2017 Issue No. 23

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

यह कैंप जो एक महीने तक है इससे भरपूर लाभ उठा लो।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला फरमाते हैं कि

"आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर कहा कि रोज़ा ढाल है और आग से बचाने का मज़बूत क़िला है। (मुस्नद अहमद बिन हंबल, भाग-3, पृष्ठ-458, हदीस संख्या - 9214) परन्तु यह आग से बचाने का मज़बूत क़िला तब बनता है जब ख़ुदा तआला के लिए इंसान अपने प्रत्येक कर्म को करे। ख़ुदा तआला की प्रसन्नता की प्राप्ति अपने सामने रखे। दुआओं और ज़िक्रे इलाही में दिन और रात गुज़ारने की चेष्टा करे। तक़्वा पर चले। तक़्वा के बारे में ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में असंख्य स्थानों पर ध्यान दिलाया है और कहा जो इस सोच के साथ रोज़े रखे कि तक़्वा धारण करना है, ज़िक्रे इलाही और दुआओं के साथ अपने दिन रात गुज़ारने हैं, अपनी इबादतों के हक़ के साथ बन्दों के अधिकारों को देने की ओर भी ध्यान देना है तो अल्लाह ने कहा कि यह रोज़ा फिर मेरे लिए है और फिर मैं इसका बदला हूं।

(सही बुख़ारी, किताब अत्तौहीद, हदीस संख्या - 7492)

अर्थात् ऐसे रोज़ेदार फिर अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने वाले हो जाते हैं। जिनकी नेकियां अस्थाई, सीमित और रमज़ान के महीने के लिए नहीं होतीं बल्कि वास्तविक तक़्वा की समझ इन को हो जाती है। यह नेकियां फिर रमज़ान के बाद भी जारी रहती हैं। ऐसे लोग फिर एक रमज़ान को अगले रमज़ान से मिलाने वाले होते हैं। अत: हमें इस सोच के साथ और इस चेष्टा से इस रमज़ान में से गुज़रने की चेष्टा करनी चाहिए ताकि हमारा तक़्वा अस्थाई न हो। हमारे रोज़े केवल सतही न हों, भूखें प्यासे रहने के लिए न हों। रमज़ान के उद्देश्य को समझे बिना केवल एक दूसरे को रमज़ान मुबारक कह कर फिर रमज़ान के उद्देश्य को भूल जाने वाला हमारा रमज़ान न हो। बल्कि तक़्वा की प्राप्ति हमारे सामने प्रत्येक सहरी और प्रत्येक इफ़्तारी के समय हो। दिन भर का ज़िक्रे इलाही और रात के नफ़्ल हमें तक़्वा के मार्ग दिखाने वाले हों। हम अपने ऊपर ज़्यादती करने का उत्तर उसी प्रकार उलटा कर देने वाले न हो जाएं इसके स्थान पर हम अल्लाह तआला का भय अपने दिल में रखते हुए अपने ऊपर ज़्यादती करने वाले के उत्तर में शांत हो जाएं। तक़्वा पर चलते हुए यह उत्तर दें कि मैं रोज़ेदार हूं। प्रत्येक ज़्यादती के उत्तर में "*इन्नी साइमुन*" के शब्द हमारे मुंह से निकलें।

(सही बुख़ारी, किताब अस्सौम, हदीस संख्या - 1894)

हमें सदैव याद रखना चाहिए कि हमारे सम्मान, हमारी बढ़ाई किसी को नीचा दिखाने या उसी प्रकार जैसे को तैसा उत्तर देने में नहीं और अपने ऊपर की गई ज़्यादतियों का बदला लेने में नहीं बल्कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता की प्राप्ति में है। इसी में हमारी बढ़ाई है, इसी बात में हमारा सम्मान है कि हम यह देखें कि अल्लाह तआला किस को सम्मान देता है। अल्लाह तआला कहता है اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ (अलहुजरात - 14) अल्लाह तआला के समीप तुम में सब से अधिक सम्माननीय वही है जो सब से अधिक मुत्तक़ी है। अत: अल्लाह तआला के समीप सम्माननीय होने का यह मापदण्ड है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इस बारे में एक उपदेश है जो एक अल्लाह तआला का भय रखने वाले के रोंगटे खड़े कर देता है।

आप कहते हैं कि :

"अल्लाह के समीप वही सम्माननीय एवं आदरणीय है जो मुत्तक़ी है। अब जो मुत्तक़ियों की जमाअत है ख़ुदा उसको ही रखेगा और दूसरी को तबाह करेगा। यह नाज़ुक स्थान है और इस स्थान पर दो खड़े नहीं हो सकते। कि मुत्तक़ी भी वहीं रहे एवं शरारती तथा अपवित्र भी वहीं। आवश्यक है कि मुत्तक़ी खड़ा हो और ख़बीस (बुरा) हलाक किया जावे और चूंकि इसका ज्ञान ख़ुदा को है कि कौन उसके निकट मुत्तक़ी है।" कहा "अत: यह बड़े भय का स्थान है वह व्यक्ति जो मुत्तक़ी है और हतभागा है वह जो ला'नत के नीचे आया है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग-3, पृष्ठ-238-239, संस्करण - 1984 प्रकाशन यू.के.)

अत: यह बड़ी भय देने वाली चेतावनी है। अल्लाह तआला कहता है कि रोज़े और यह रमज़ान का महीना इसलिए है कि तुम तक़्वा धारण करो और यह अल्लाह तआला का अपने बन्दों पर अत्यधिक रहम का व्यवहार है। फिर कहा कि इन दिनों में शैतान को जकड़ कर मैंने तुम्हारे लिए यह सामान पैदा कर दिए हैं कि तुम आसानी से तक़्वा धारण कर सको। उन आदेशों पर चल सको, चलने की चेष्टा करो, मेरी निकटता पाने वाले बन सको। परन्तु अब भी यदि रोज़े के साथ स्पष्ट रूप में इबादतों की ओर ध्यान दे रहे हो परन्तु अपने अहंकारों और झूठे सम्मानों के जाल में फंसे हुए हो तो रोज़े कोई लाभ नहीं देंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर यदि हम उन जालों और कवचों को तोड़ कर बाहर नहीं निकलते और केवल और केवल ख़ुदा तआला की प्रसन्नता और उसके तक़्वा को प्राप्त करने की ओर हम ध्यान नहीं देंगे या नहीं देते तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं कि यह विरोधाभास है और प्रत्यक्ष तक़्वा की घोषणा और हृदय में अपवित्रता यह दोनों एकत्रित नहीं हो सकतीं। कहा कि भय का स्थान है और यह भय का स्थान और भी बढ़ जाता है कि किसी के तक़्वा का निर्णय किसी इंसान ने नहीं करना। यह निर्णय भी अल्लाह तआला ने अपने पास रखा है। और जब यह निर्णय ख़ुदा तआला ने अपने पास रखा है तो फिर केवल तौबा, इस्तिग़फ़ार, तस्बीह, तह्मीद और अल्लाह तआला की तौहीद का जाप और डरते डरते दिन व्यतीत करना और ख़ुदा तआला के भय से रातें गुज़ारना, इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं। परन्तु हमारा ख़ुदा बड़ा प्यार करने वाला ख़ुदा है। क़ुरबान जाएं हम उस पर कि वह यह कहता है कि मैं रमज़ान में अपने बन्दे के बहुत समीप आ गया हूं। इसलिए लाभ उठा लो जितना उठा सकते हो और तक़्वा की प्राप्ति के लिए मेरे बताए हुए मार्ग पर चलने की चेष्टा करो, ताकि तुम अपना लोक और परलोक संवारने वाले बन सको। **यह कैंप जो एक महीने तक है इससे भरपूर लाभ उठा लो। इसमें विशेष रूप से अल्लाह तआला के लिए की गई नेकियां तुम्हें दूसरे दिनों में की गई नेकियों के अनुपात में कई गुना पुण्य का अधिकारी बनाने वाली होंगी।**

(ख़ुत्बा जुम्अ: 4 जुलाई 2014 ई)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad